रॉ शुगर एक्सपोर्ट टारगेट घटकर आधा

एक्सपोर्ट टारगेट को 9-10 लाख टन से घटाकर अधिकतम 3-5 लाख टन किया गया

[जयश्री भोसले | पुणे]

गन्ने की पेराई के सीजन के अंतिम चरण में पहुंचने के साथ ही इंडियन शुगर एक्सपोर्टर्स ने रॉ शुगर एक्सपोर्ट के अनुमानित एक्सपोर्ट को घटाकर आधा कर दिया है। एक्सपोर्टर्स को ब्राजील की सस्ती रॉ शुगर से निपटने में काफी दिक्कत हो रही है। कुछ महीने पहले के 9-10 लाख टन रॉ शुगर एक्सपोर्ट के अनुमान के बजाय एक्सपोर्टर्स अब अपने टारगेट को घटाकर अधिकतम 3-5 लाख टन किया गया है।

भारत सरकार ने 14 लाख टन रॉ शुगर के निर्यात पर प्रति टन 4,000 रुपये सब्सिडी देने की घोषणा की थी, लेकिन यह फैसला देरी से हुआ था। प्रमुख इंडस्ट्री प्लेयर्स को उम्मीद थी कि भारत करीब 9-10 लाख टन रॉ शुगर का प्रॉडक्शन कर सकता है।

हालांकि, लगभग सभी मल्टीनेशनल और इंडियन एक्सपोर्ट हाउस ने इकनॉमिक टाइम्स को बताया कि अब यह व्यावहारिक नहीं रहेगा। एम्मसंस इंटरनेशनल लिमिटेड के रीजनल हेड करन अमीन ने बताया, 'मार्केट्स में कोई बायर्स नहीं हैं। सेंटीमेंट्स काफी डाउन है।' इंटरनेशनल मार्केट में ब्राजील की रॉ शुगर 310-312 डॉलर प्रति टन पर मिल रही है। जबकि भारतीय रॉ शुगर की कीमत 345 डॉलर प्रति टन है। इसके अलावा, कच्चे तेल की घटती कीमतों के कारण ब्राजील अपनी फ्रेट कॉस्ट को भी घटाने में सक्षम रहा है, जबकि भारत के साथ ऐसा नहीं है। भारतीय रॉ शुगर के मुकाबले इंपोर्टेड रॉ शुगर 3,000 रुपये प्रति टन तक सस्ती है।

ब्राजील से मिल रही टक्कर

- **इंटरनेशनल मार्केट** में ब्राजील की रॉ शुगर 310-312 डॉलर प्रति टन पर मिल रही है। जबकि भारतीय रॉ शुगर की कीमत 345 डॉलर प्रति टन है
- **सरकार की** ओर से 14 लाख टन रॉ शुगर के एक्सपोर्ट पर प्रति टन 4,000 रुपये सब्सिडी देने की घोषणा में देरी भी प्रमुख वजह बनी

एक्सपोर्टर्स का कहना है कि करीब 50 फीसदी या भारत से डिस्पैच की जाने वाली ज्यादा रॉ शुगर इनडायरेक्ट रूट के जरिए भेजी जाएगी। एक प्रमुख मल्टीनेशनल ट्रेड हाउस के आला अधिकारी ने बताया, 'अब हम ब्राजील की करेंसी की कमजोरी और कुछ दूसरे बहाने बनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हकीकत यह है कि इंटरनेशनल मार्केट में कोई बायर्स नहीं है।' एक दूसरे प्रमुख मल्टीनेशनल ट्रेड हाउस के मैनेजिंग डायरेक्टर ने बताया कि भारतीय शुगर मिलें 19 रुपये प्रति किलो से कम पर चीनी देने को तैयार नहीं हैं, जिससे ब्राजील के साथ प्रतिस्पर्धा करने में काफी मुश्किल हो रही है। उन्होंने बताया, 'ब्राजील का स्टॉक खत्म होने के साथ ही हमारी शुगर की डिमांड बढ़ेगी।' कम एक्सपोर्ट और लगातार पांचवें साल सरप्लस शुगर प्रॉडक्शन सप्लाई के मोर्चे पर दबाव बना रहा है। गर्मियां आने में हो रही देरी से भी शुगर की लिवाली कमजोर है।

The Economic Times
16-3-15